समावेशीकरणको दिशामा एउटा फड्को : गोरखापत्रद्वारा प्रकाशित अवधी भाषा पृष्ठ
२०६६ फागुन २१ गते शनिबार

गोरखापत्र
नयाँ नेपाल

सांस्कृतिक सङ्गोष्ठी भव्यता के साथ मनावय कय निर्णय

अवधी सांस्कृतिक विकास परिषद अव नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान के संयुक्त आयोजना महिया भवानी भिक्षु सतवार्षिकी के अवसर पर यही चइत २८ अव २९ गते कपिलवस्तु जिला कय सदरमुकाम तौलिलवा महिया अवधी सांस्कृतिक सङ्गोष्ठी २०६६ भव्यता के साथ मनावय कय निर्णय लिहा गा हय। यहि दुई दिन कय कार्यक्रम चइत २८ गते भिन्नही प्रभात फेरि के साथ सुरु किहा जाई। जवने महिया क्रमशः भवानी भिक्षु के बारे महिया प्रवचन, अवधी संस्कृति, अवधी भाषी क्षेत्र कय ऐतिहासिक रुपरेखा, अवधी लोकसाहित्य, धार्मिक सामाजिक अव पुरातात्विक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रिहार धाम अव अवधी समाज महिया हिन्दू अव मुस्लिम धर्मावलम्बी समुदाय के बीचे सामाजिक सामञ्जस्यता आदि विषय पर छलफल कय कार्यक्रम तय किहा गवा हय।

यकरे साथ साथ रात महिया सांगितिक कार्यक्रम अव दुसरे दिने अर्थात् चइत २९ गते बहुभाषिक कवि गोष्ठी आयोजित करय कय कार्यक्रम तय किहा गय हय।

अवधी भाषी क्षेत्रकय यी कार्यक्रम दुसरा महत्वपूर्ण कार्यक्रम होय के नाते अवधी सांस्कृतिक विकास परिषद स्थानीय निकाय, राजनीतिक दल, गैर सरकारी संस्था, नागरीक समाज आदि से विशेष रुप महिया समन्वय कइके भव्यता के साथ मनावय कय निर्णय लिहे हय। यहि बात कय जानकारी यही फागुन १८ गते परिषद से जारी प्रेस विज्ञप्ति महिया दिहा गा हय। ■

राज्य पुनर्संरचना आयोग कय क्षेत्राधिकार महिया विवाद अव संघीयता

विक्रममणि त्रिपाठी

यही फागुन १९ गते प्रमुख तीन दल नेपाली कांग्रेस, माओवादी अव एमाले सामिल उच्चस्तरीय राजनीतिक संयन्त्र कय मुख्य छलफल कय विषय वना राज्य पुनर्संरचना आयोग कय क्षेत्राधिकार। छलफल कय जगही रहा होटल ज्याडिसन।

यही छलफल महिया तीन दल दुइ ओर देखाने। एक ओर कांग्रेस एमाले कय कहब हय कि जातीय आधार पर राज्य कय पुनर्संरचना नाही होय के चाहीं। कम से कम सङ्ख्या महिया प्रदेस बनाय कय राज्य पुनर्संरचना होय के चाहीं। वही माओवादी कय कहब हय कि प्रदेस के सवाल पर संविधान सभा महिया व्यापक छलफल होइकय १४ प्रदेस कय खाका तयार किहा जाय चुका हय। अब यकरे समानान्तर दुसरे किसिम कय निर्णय आवय वाले हिसाब से आयोग का अधिकार देब उचित नाही हय।

यही राज्य पुनर्संरचना आयोग कय गठन के बारे महिया किहा व्यवस्था के बारेमे ध्यान दिया जाय तो काव पावा जात हय कि अन्तरिम संविधान महिया संविधान घोषणा होय के ६ महिना के भित्तर राज्य पुनर्संरचना के बारे महिया सुझाव देय के खातिर विभिन्न क्षेत्र कय विज्ञ लोगन का सामिल कइकय सवायत्त आयोग कय गठन करय कय व्यवस्था रहा। यही के आधार पर लगभग एक वर्ष पहिले माओवादी के नेतृत्व कय सरकार गणेशमान गुरुङ्की के अध्यक्षता महिया आयोग बनाय कय सुरुवातव किहिस। लेकिन वहि समय बांकी दल आपन आपन सदस्य यहि आयोग मे नाही पठयीन। जवने के नाते समय से आयोग नाही गठन होइ पाय।

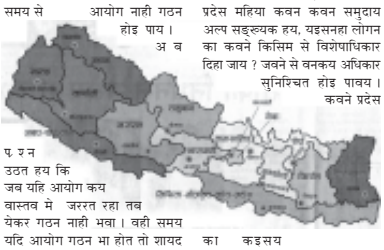

अब प्रश्न उठत हय कि जब यहि आयोग कय वास्तव मे जरुरत रहा तब येकर गठन नाही भवा। वही समय यदि आयोग गठन भा होत तो शायद वकरे ओर से कवनो राय आवत अव वही के आधार पर संविधान सभा कय विषयगत समिति आपस में छलफल कइके आपन राय देत।

लेकिन अब तो बागमती महिया ढेर पानी वहि चुका हय। संविधान सभा के सामने भावी १४ प्रदेस कय खाका पेस होइ चुका हयँ। का यहि स्तर पर आयकय यहि खाका का चुनौती देय के हिसाब से राज्य पुनर्संरचना आयोग का अधिकार देब उचित रही?

हम्मय कहय के होय तो हम कहब कि यी कदापि उचित नाही रही। बलुक काव होय सकत हय कि राज्य पुनर्संरचना आयोग यहि १४ प्रदेस कय भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि हरेक पक्ष कय व्यापक अध्ययन करय, कवने कवने प्रदेस महिया कवन कवन समुदाय अल्प सङ्ख्यक हय, यइसनहा लोगन का कवने किसिम से विशेषाधिकार दिहा जाय? जवने से वनकय अधिकार सुनिश्चित होइ पावय। कवने प्रदेस का कइसय घटावा या बढावा जाय, जवने से सबल प्रदेस बनय आदि विविध विषयवस्तु पर अध्ययन कइके आवश्यक जानकारी देवय वाले हिसाब से आपन राय सुझाव संविधान सभा का देयँ। जवने आधार पर संविधान सभा महिया १४ प्रदेस कय भावी खाका के उप्पर व्यापक बहस होय। नागरिक समाज, कर्मचारी अव गाँवगाँव मे संघीयता कय मूल प्रश्न, एकात्मक शासन व्यवस्था से शंघीय कवने कवने नाते बढिया होत हय? यहि बारे मे व्यापक बहस कय जरुरत हय। यदि जनमत सङ्ग्रह महिया जाय के हय तो वकरे पहिले गाँवगाँव मे यी सब के बारे महिया व्यापक रुपसे बहस चलाइब जरुरी हय। यहि बहस कय आउर प्रश्न होइ सकत हयँ :

- कवने कवने आधार पर यी भावी १४ प्रदेस कय रुपरेखा बना हयँ?
- नवा प्रदेस महिया कइसय अल्प सङ्ख्यक अव बहुसङ्ख्यक का समान अधिकार मिली?
- जातजाति अब भाषा के आधार पर जवने हिसाब से राज्य बना हय, वहि हिसाब से राज्य बना तो अल्प सङ्ख्यक के उप्पर होयवाले भेदभाव का कइसय रोका जायी? जवने से नया द्वन्द्व कय सृजना न होय।

यी सबका ध्यान राखि कय काम किहे एक नवाँ रुप जरुर देखाय परी। यही नाते अपने क्षमता, हुनर अव कुशलता से अपने समस्या कय वस्तविक समाधान निकारा जाय।

राजनीतिक दल कय नेता लोगन मे खास कइकय नेपाली काङ्ग्रेस, माओवादी अव एमाले कय मुख्य नेता लोग आपने अपने क्षमता कय उपयोग करय कय छोडि कय बिदेसी संस्था अव परामर्शदाता लोगन के उप्पर निर्भर रहत हयँ। जवने से सहयोग के नाँव पर विदेसी हस्तक्षेप बढत जात हय। जवन मुलुक का दीर्घ कालीन विकास के हय तो वकरे पहिले गाँवगाँव मे यी सब के बारे महिया व्यापक रुपसे बहस चलाइब जरुरी हय। यहि बहस कय आउर प्रश्न होइ सकत हयँ :

- कवने कवने आधार पर यी भावी १४ प्रदेस कय रुपरेखा बना हयँ?
- नवा प्रदेस महिया कइसय अल्प सङ्ख्यक अव बहुसङ्ख्यक का समान अधिकार मिली?
- जातजाति अब भाषा के आधार पर जवने हिसाब से राज्य बना हय, वहि हिसाब से राज्य बना तो अल्प सङ्ख्यक के उप्पर होयवाले भेदभाव का कइसय रोका जायी? जवने से नया द्वन्द्व कय सृजना न होय।

यी सबका ध्यान राखि कय काम किहे एक नवाँ रुप जरुर देखाय परी। यही नाते अपने क्षमता, हुनर अव कुशलता से अपने समस्या कय वस्तविक समाधान निकारा जाय।

राजनीतिक दल कय नेता लोगन मे खास कइकय नेपाली काङ्ग्रेस, माओवादी अव एमाले कय मुख्य नेता लोग आपने अपने क्षमता कय उपयोग करय कय छोडि कय बिदेसी संस्था अव परामर्शदाता लोगन के उप्पर निर्भर रहत हयँ। जवने से सहयोग के नाँव पर विदेसी हस्तक्षेप बढत जात हय। जवन मुलुक का दीर्घ कालीन विकास के हय तो वकरे पहिले गाँवगाँव मे यी सब के बारे महिया व्यापक रुपसे बहस चलाइब जरुरी हय। यहि बहस कय आउर प्रश्न होइ सकत हयँ :

- कवने कवने आधार पर यी भावी १४ प्रदेस कय रुपरेखा बना हयँ?
- नवा प्रदेस महिया कइसय अल्प सङ्ख्यक अव बहुसङ्ख्यक का समान अधिकार मिली?
- जातजाति अब भाषा के आधार पर जवने हिसाब से राज्य बना हय, वहि हिसाब से राज्य बना तो अल्प सङ्ख्यक के उप्पर होयवाले भेदभाव का कइसय रोका जायी? जवने से नया द्वन्द्व कय सृजना न होय।

यी सबका ध्यान राखि कय काम किहे एक नवाँ रुप जरुर देखाय परी। यही नाते अपने क्षमता, हुनर अव कुशलता से अपने समस्या कय वस्तविक समाधान निकारा जाय।

राजनीतिक दल कय नेता लोगन मे खास कइकय नेपाली काङ्ग्रेस, माओवादी अव एमाले कय मुख्य नेता लोग आपने अपने क्षमता कय उपयोग करय कय छोडि कय बिदेसी संस्था अव परामर्शदाता लोगन के उप्पर निर्भर रहत हयँ। जवने से सहयोग के नाँव पर विदेसी हस्तक्षेप बढत जात हय। जवन मुलुक का दीर्घ कालीन

तीन दलीय उच्चस्तरीय राजनीतिक संयन्त्र केकर सर्त काव?

नेपाली कांग्रेस

- माओवादी संवैधानिक सिद्धान्त के विश्वव्यापी लोकतान्त्रिक मान्यता का स्वीकार करय।
- राज्य पुनर्संरचना महिया सहमती जनावय।
- कब्जा किहा सम्पत्ति फिर्ता करय।
- वाइसिएल कय अर्धसैन्य संरचना खारिज करय।
- आउर दल के विरुद्ध कय गतिविधि बन्द करय।
- निर्धारित मिति महिया संविधान जारी करय कय प्रतिवद्धता जनावय।

माओवादी

- राष्ट्रपति कय कदम सचियावा जाय।
- नागरिक सर्वोच्चता कय बहाली किहा जाय।
- माओवादी के नेतृत्व महिया सरकार गठन किहा जाय।
- राष्ट्रिय सुरक्षा नीति तय किहा जाय।
- सुरक्षा नीति के आधार पर समायोजन के तरीका का संविधान महिया परिभाषित किहा जाय।
- संविधान महिया परिभाषित किहे अनुसार लडाकु कय समायोजन किहा जाय।

एमाले

- लडाकु कय समायोजन अव पुनर्स्थापना महिया माओवादी सहयोग करय।
- कब्जा किहा सम्पत्ति माओवादी फिर्ता करय।
- विस्थापित लोगन का लउटय कय वातावरण बनावा जाय।
- आउर राजनीतिक दल कय गतिविधि के उप्पर कय हमला बन्द करय।
- जिला जिला महिया चलावा जाय वाले समानान्तर सत्ता खारिज किहा जाय।
- वाइसिएल कय अर्धसैनिक संरचना अव ब्यारेकीकरण अन्त्य किहा जाय।
- वाइसिएल के नाव पर होयवाले हिंसा, चन्दा असुली बन्द किहा जाय।
- आपराधिक गतिविधि महिया सामिल कार्यकर्ता के उपपर कानुनी कार्यवाही करय महिया माओवादी सहयोग करय।
- माओवादी अपने का नागरिक लोकतान्त्रिक पार्टी के रुप महिया बदलय मे सहयोग करय। ■

सक्षम तव हमही लोग का होयक परा पहिले

जनता के हाथ मे नवा संविधान परयवाला दिन नकचेरे होतय जात अवस्था मे निर्धारित मिति मे नवासंविधान जनता के हाथ मे न परिसकी कहयवाला संभावना दिनवदिन बढत गा हय। सरकार बदलय वाला अभ्यास खेल जारी हय। माओवादी आन्दोलन मि अपनेन हिसाब से आगे बढत गा हय। यही सिलसिला मे मधेसी जनअधिकार फोरम लोकतान्त्रिक कय नेता तथा नेपाल सरकार कय **महिला, बालवालिका तथा समाज कल्याण मन्त्री सर्वदेवप्रसाद ओझा** *से नवानेपाल गोरखापत्र अवधी भाषा कय सहकर्मी भगवान यादव द्वारा किहागा बातचित कय सार संक्षेप।*

मन्त्री सर्वदेवप्रसाद ओझा

मन्त्री जी स्पस्ट बताय दियाजाय, जेठ १६ गते भरेम जनता के हाथ मे नवा संबिधान आयजाइ?

संभावना घटत गा हय। चारिओर सभे नाय होइपाइ बोलय लाग हँय। सब राजनितिक दल कय सक्रियातापूर्वक सकारात्मक प्रयास भवा होत तव संभावना बना रहत। कार्यतालिका अनुसार अब निर्धारित समय मे यी संभव नाय हय।

समग्र मधेश एक प्रदेश कय नारा तव भाषण तक मात्र सिमित रहिजाइ जइसन देखात हय, का कहाजाइ। जब नाय होयलायक रहा तव बेकार कय नारा का करय दियागा?

मधेस के समून्नत विकास करती समग्र मधेश एक प्रदेश बहुत आवश्यक सवाल होय। स्वयत्तता सब से बडा बात होय। टेरोटरी दुशर बात होय। आजतक शासक लोग मधेश का उडने हिसाब से शोषण किहिन हय, विभेद किहिन हय वहकय समूच्च निकास स्वायत्त मधेस से मात्र संभव हय। स्वयत्तता प्राप्त होयक बाद हमलोग जनसंख्या अे आधार पे भाषा के आधार पे भुगोल के आधार पे स्वयत्त इलाका बनाय सकाजात हय।

लकिन राज्य पुनसंरचना तथा शक्ति बाँटफाँट वाली समिति संबिधानसभा मे मधेश का दुइ अलग राज्य मे बाँटय के प्रस्ताव किहिस हय?

यी मधेश का फोरिकय फिरसे मधेश मे शासन करयक शासक लोगके रणनिति अनुसार प्रस्ताव आवा हय। भौगोलिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक समानता भये मधेसी या थारु,मुस्लिम,या अन्य वर्ग कय आदमी तव तक विभेद कय शिकार बनावा जइहयँ जबतक मधेश एक स्वयत्त प्रदेश न बनी।

मधेश आन्दोलन के बाद तमाम मधेशबादी दल सब निणायंक राजनितिक शक्ति के रूपमे आगे आये। लकिन बिभेद के बिरूद्ध लड़यवाले, समाबेशीकरण करती आवाज उठावयवाले पुरे पश्चिमी मधेस का बिभेद कय शिकार बनाइन, चाहे मन्त्रालय बाँटफाँट मे होय या राजनितिक नियुक्ती सब मे, हय नाही?

बहुत बढिया सवाल हय आप कय। पहिले तव बिभेद के बिरुद्ध लड़हिवाले बिभेद किहिन जवन कहागा यय बात मे सत्यता हय। यहिका करती तव हमही लोग का लड़यक परी। हमही लोग का अवाज उठावक परी। यहव सही बात होय कि पश्चिम अबही उपेक्षित हय, लकिन सक्षम तव हमही लोग का होयक परा पहले। अधिकार दिययवाला काम कोइ बलाय के तव दियत नाय हय। जागरुक होयक परा। अव राजनिती करय वालो का थीम कय राजनिती करयक परा। आज सबसे बडा राजनितिक समस्या का बनिगवा हय कि हिंया थीम कय राजनिति ओरात गवा हय। आपके पास पद हय पइसा हय पावर हय तव आप राजनीतिक शक्ति मे रहाजाइ नाही तव बाहर कय मुद्द देखयक परी।

माओबादी अब फोरम आन्दोलन के बारे मे का कहाजाइ?

यी तव कुर्सी गँवाये पय आपन पीरा रोइब होय, आउर कुछ नाय। आज संविधान बनाइब सबसे बड़ा बात होय, लकिन आन्दोलन मे जाय के माओवादी अव फोरम जनता के अभिमत कय उपहास किहिन हय। यय लोग का इमानदारी के साथ संबिधान निर्माण प्रक्रिया मे साथ दिययक चाही। सड़क मे जोरजोर से नारा लगाये से कोइ मन्त्री प्रधानमँत्री नाय बनिजात हय।

तत्काल सरकार बदलयक संभावना हय कि नाय?

कसरत तव तमाम मेरकय होत रहत हय लकिन अबही अइसन कउनव संभावना नाय हय। यहय सरकार संविधान बनाय के जनता का सौंपी।

अन्तिम सवाल, आपतव बाँके जिला से संबिधान सभा करती निबाचिंत सभासद भि होवाजात हय, प्रस्ताबित थरूहट,अवध अव लुम्बिनी राज्य कय राजधानी कहाँ बनी, चर्चा अनुसार दाँग मे या नेपालगँज मे?

यी दुनव जगह उपयुक्त नाय हय। कपिलवस्तु अव बाँके के बीचमे देउखर हय। अगर वइसन भवा तव यी जगह पय राजधानी बनावय पे हमसव कय पहल रही। ■

पृष्ठ संयोजक : विश्वनाथ पाठक
सह संयोजक : आलोक तिवारी
पत्रावार ठेगाना :
नयाँ नेपाल, गोरखापत्र दैनिक
पो.ब.नं.२९१०० काठमाडौं
E-mail: alokspt@gmail.com

नयाँ नेपालको भोलिको अङ्क सुतवार र मारवाडी भाषामा प्रकाशित हुनेछ।

रङ्ग विरङ्गी फगुवा

रङ्ग विरङ्गी कपड़ा पहिरे मुह मे रङ्ग, अबीर, गुलाल पोते लरिके, मेहरारू अव मर्द। सड़किन पर हँसत गावत अव नाचत लोगन कय टोली। ढोल झांझ मजीरा के धुन पर होरी गावत लोग। एक दुसरे के मुह पर अबीर, गुलाल लगावत लोग। गाँव के गल्लिन मे उडत गुलाल अव हवा मे गूजत अवाजि।

होली हय भाइ होली हय ... ... ।
होली माता देव असीस ... ... ।

यही अवाजि के बीचमा हमरे लोगन कय टोली होली खेलत हय। रामू, श्यामू, अब्बास, राम जियावन, बच्चू सब लोग पिचकारी मे रङ्ग भरिके सबका नहुआवा जात हयँ। हम्मन के आगे बड़का भइया कय टोली हय। ऊ लोग ढोल, झाझ, मजीरा बजावत अव फगुआ गावत आगेआगे चलत हयँ। हमरे वन लोगन के पाछे आपन गोलि बनाय कय पिचकारी से सबका सरोबर किहा जात हय।

वह दिने हमरे सब गाँव मे सबके यिहाँ जावा जात हय। छोट बड़ा सब कय सब एक दुसरेकाँ रङ्ग, अबीर लगावत हयँ। होली खेलत हयँ अव जेकरे किहाँ जवन बना हय, ऊ खात हयँ। कवनो छुवाछुत नाही। केहू छोट बड़ा नाही।

यहि दिने छोट बड़ा सब मिलिके होली खेलय जात हयँ। आज के दिने ऊँच, नीच, धनी गरीब मे कवनो अन्तर नाही होत हय। सबके यिहाँ जावा जात हय अव सामूहिक रूप से फगुआ गावा जात हय।

चारो ओर रङ्ग अव अबीर से सरोबर लोग, फगुआ गावय वाले मर्द, मेहरारु अव हमरे लोगन कय अलग अलग टोली। जवने ओर देखव तववने ओर यिहय नजारा देखय्क मिलत हय।

जानत हव यी फगुवा कय तिउहार कब शुरू होत हय। फगुवा कय तिउहार वसन्त पञ्चमी के दिने सम्मत गाड़य के वाद शुरू होइ जात हय। सम्मत गड़ुवावय खातिर गाँव मे घरघर मे सीधा उठावा जात हय। यी सीधा सम्मत गाड़य वाले पण्डितजी काँ दिहा जात हय। यही दिन से रोज संझा के गाँव मे घूमि घूमि कबीर गावा जात हय अव लकड़ी कन्डा एकट्ठा किहा जात हय। यी लकड़ी कन्डा सम्मत मे डारा जात हय। एक महीना तक यही किसिम से लकड़ी कन्डा उगाहय कय काम रोज होत हय। फागुन पुन्नवासी के दिने यी सम्मत वही पण्डित जी से विधि विधान पुर्वक जरावा जात हय। फिर सवलोग वहि सम्मत मे हाथ गोड़ सेका जात हय।

मेहरारु लोग वह दिने सारे घर के लोगन काँ बुकवा लगावति हीं। ऊ बुकवा के लीभी से पाच ठू चिरई बनाइके, सम्मत कय पूजा करति हीं उ चिरई अव कन्डा चढ़ावत हीं। जव कय अव तीसी कय बाली भूजि कय घरे लावति हिन। यी जव कय बाली अव तीसी घरके ओसारा मे टाङि दिहा जात हय।

दुसरे दिन सम्मत बुतावय के बाद गाँव के हरेक घर मे वोकर राखि (भभूति) लइ जावा जात हय। सब वहि भभूति काँ अपने देहि मे लगावत हयँ। यकरे साथय गाँव के लरिकन कय टोली बाकी राखि एकट्ठा कइके कबीर गावत पारी पारी सबके घरे जात हयँ अव वही राखी से सबका नहुआवत हयँ। सारा गाँव के लोगन का नहुवावय के बाद सब नहात धोवत हय। वोकरे बाद घर मे बना पुड़ी पकवान खावा जात हय अव फिर शुरू होइ जात हय रङ्ग अव अबीर से होली खेलय अव फगुवा गावय कय काम।

होली कय तिउहार मनावय के पाछे जवन धार्मिक कथा प्रसिद्ध हय, ऊ होय भक्त प्रहलाद अव हिरण्यकश्यप कय कथा।

कहा जात हय कि हिरण्यकश्यप बहुत शक्तिशाली राजा रहा। ऊ राक्षस रहा। वहि समय राक्षस अव देवता लोगन मे युद्ध होत रहत रहा। हिरण्यकश्यप अपने बल अव पराक्रम से देवता लोगन का जीति लिहे रहा। यसे ऊ यतना अभिमानी होइ गय रहा कि अपने राज्य मे भगवान कय नाँम लेवय्क मिनाही कइ दिहे रहा। ऊ डुग्गी पिटवाइ दिहे रहय कि ओकरे राज्य मे जे भगवान कय नाव लेई, वोका कठोर दण्ड दिहा जायी। हिरण्यकश्यप के राज्य मे अब भगवान के जगही सब वही कय पूजा
करत रहे।

हिरण्यकश्यप कय लरिका प्रहलाद भगवान कय भक्त रहयँ। वन अपने बाति पर अड़िग रहे। प्रहलाद भगवान कय नाँव लेव नाही छोड़िन। हिरण्यकश्यप प्रहलाद का किसिम किसिम कय दण्ड दिहिन। बंकिर वन साफ साफ बचत गयें।

हिरण्यकश्यप कय बहिन होलिका काँ यी बरदान रहय कि ऊ आगि मे नाही जरिहँय। हिरण्यकश्यप होलिका से कहिन कि वन प्रहलाद काँ गोदि मे लइके चिता पर बइठि जाय। होलिका वइसय किहिन। वहि चिता मे प्रहलाद तो साफ साफ बचि गये, लेकिन होलिका जरिकें मरि गयीं। कहा जात हय, फगुवा कय त्योहार यही होलिका के जरय के खुशियाली मे मनावा जात हय। यही के याद मे यी सम्मत जरावा जात हय। सम्मत के चारो ओर घूमि घूमि लरिके गावत हयँ –

सम्मत माता देव असीस
लरिके जीयय लाख बरीस।

फगुवा के तिउहार में गावा जाय वाले गीत होरी, फगुआ, चीतावा आदि के नाम से प्रसिद्ध हयँ। यहि तिउहार मे रेखता नाम कय एक विशेष किसिम कय लोकगीत गावा जात हय।